अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (×) मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।

Download from www.MsEducationTv.com

12.उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13.उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है। परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक-योजना

विषय - हिंदी

कक्षा - दसवीं

कोड - B

कक्षा : दसवीं | अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

Download from www.MsEducationTv.com

खंड -क

प्रश्न- संख्या	उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर		**2X7 = 14 अंक**
क)	(i) पीत (पीला) है अम्बर जिसका - बहुव्रीहि समास	
	(ii) मृग के समान नयन - कर्मधारय समास	2
ख)	स्वर का स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है,उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे - महा + आत्मा = महात्मा	2
ग)	(i) अधि - अधिनियम	1
	(ii) सु - सुपुत्र	1
घ)	(i) पर्वत - पहाड़ नग	1
	(ii) पत्नी - गृहिणी,भार्या	1
ङ)	विकारी शब्द - लड़का, उसका , विकारी शब्द - क्योंकि, बाहर	2
च)	(i) उपमा अलंकार	1
	(ii) मानवीकरण अलंकार	1
छ)	चौपाई एक सम मात्रिक छंद है। इस छंद के प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में जगण और तगण नहीं होते। जैसे -	2

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनिपुत्र पवन सुतनामा। 2 अंक

प्रश्न- 2 किसी एक विषय पर निबंध		**5 अंक**
क)	भूमिका	1
ख)	विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा	3
ग)	उपसंहार	1
प्रश्न- 3 पत्र लेखन		**5 अंक**
क)	आरंभ और अंत की औपचारिकताएं	1
ख)	विषय वस्तु	3
ग)	भाषा	1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 4 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर		**6 अंक**
(i)	ख) व्यंग्य	1
(ii)	ग) अवधी	1
(iii)	ख) पत्नी की स्मृति को	1
(iv)	क) फाग	1
(v)	घ) करोड़ों	1
(vi)	ख) सरगम के उच्च स्वर को	1
प्रश्न- 5 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर		**(5)**
(i)	कवि - तुलसीदास , कविता - राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	1
(ii)	रघुकुल परंपरा में देवता, ब्राह्मण,हरि के भक्त और गाय पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जाता।	1
(iii)	भृगुसुत परशुराम को कहा गया हैं।	1
(iv)	उपमा अलंकार	1
(v)	कुम्हड़बतिया सीताफल को कहा जाता है और यहाँ पर कमजोर या	

Download from www.MsEducationTv.com

निर्बल व्यक्ति को कहा गया है। 1

प्रश्न- 6 काव्य-सौंदर्य- **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव - सौंदर्य प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पीड़ित और प्यासे लोगों के हृदय की पीड़ा को दूर करने के लिए बादलों का आह्वान किया है।बादलों की गर्जन शक्ति के रूप में है और ये बादल नया जीवन देने वाले हैं।

शिल्प सौंदर्य -भाषा - खड़ी बोली

छंदमुक्त कविता

शैली - संबोधन

अलंकार - ललित -ललित - पुनरुक्ति-प्रकाश ,

बाल कल्पना के से पाले - उपमा अलंकार

प्रश्न- 7 प्रश्नों के उत्तर **3+3= 6 अंक**

क) गोपियों के अनुसार योग साधना एक कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगला नहीं जा सकता ।वे इसे एक ऐसी बीमारी मानती हैं जिसके बारे में न देखा, न सुना और न ही भोगा। वे योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कहती हैं जिनका मन विचलित या अस्थिर है।

ख) 'उत्साह' कविता का मूल स्वर क्रांति है। इस कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि जिस प्रकार बादल अपनी गर्जन-तर्जन से, अपनी विद्युत और वज्र जैसी कठोरता से तप्त धरा को शीतलता और जनजीवन को एक नया जीवन पाने हेतु उत्साहित कर देता है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने अंदर छिपे गुणों व शक्ति की घोषणा करके अपने अधिकार पाने हेतु प्रवृत्त हो सकता है। वह ऐसा करके परतंत्रता की बेड़ियों को भी तोड़ सकता है।

खंड - ग (क्षितिज गद्य खंड)

प्रश्न- 8 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **(6)**

(i) ख) हालदार साहब 1

(ii) ख) तीस कोस 1

(iii) घ) व्यंग्य 1

(iv) क) दो वर्ष 1

(v) ख) नौबतखाना 1

(vi) ख) लेनिन 1

प्रश्न- 9 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

(i) पाठ - एक कहानी यह भी , लेखिका - मन्नू भंडारी 1

(ii) आज़ाद हिन्द फ़ौज के मुक़दमें के सिलसिले में । 1

(iii) सभी कॉलेजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जाकर हड़ताल करवा रहा था। 1

(iv) पिता जी के मित्र का स्वभाव दक़ियानूसी था। 1

(v) चुग़ली करना । 1

प्रश्न-10 लेखक/लेखिका परिचय **(5)**

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

प्रश्न- 10 प्रश्नों के उत्तर **2+2 =4 अंक**

Download from www.MsEducationTv.com

(क) रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित यह पाठ एक संदेशपूर्ण रेखाचित्र है। इस रेखाचित्र के माध्यम से लेखक ने ऐसे अद्भुत चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत किया है जो मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि वेशभूषा या बाह्य अनुष्ठानों से कोई संन्यासी नहीं होता। संन्यास का आधार तो जीवन के मानवीय सरोकार होते हैं। इस लेख के माध्यम से लेखक ने सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार किया है और ग्रामीण जीवन की सजी झांकी प्रस्तुत की है।

(ख) जो व्यक्ति अपनी बुद्धि अथवा विवेक से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है, वही वास्तव में संस्कृत व्यक्ति कहलाता है। ऐसा व्यक्ति मानवता की भलाई के लिए किसी नई चीज़ का आविष्कार करता है। मनुष्य कोई कितनी ही बारीकियाँ क्यों न जान ले, परंतु संस्कृत कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। उस सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाला ही संस्कृत व्यक्ति होगा। इसलिए अन्य व्यक्ति न्यूटन से ज़्यादा सभ्य हो सकते हैं, लेकिन संस्कृत नहीं।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न- 12 कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर **3+3 = 6 अंक**

(क) बचपन में लेखक का नाम तारकेश्वरनाथ था। उसके सिर पर लंबी-लंबी जटाएँ थीं। जब वह अपने पिता को पूजा करते देखता तब अपने माथे पर तिलक लगवाने का हठ करता। उसके पिता उसके चौड़े माथे पर भभूत से त्रिपुंड (तीन आड़ी रेखाएँ) कर देते। इस रूप में वह बिल्कुल 'बम-भोला' दिखाई देता। इस तरह उसका नाम तारकेश्वरनाथ से भोलानाथ पड़ गया।

(ख) कटाओ लायुंग से 500 फीट की ऊँचाई पर स्थित था। इसे भारत का स्विट्ज़रलैंड कहा जाता है। वह अपनी बर्फीली घाटियों के कारण प्रसिद्ध था। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता असीम है। वह अभी तक सुर्खियों में इसलिए नहीं आया क्योंकि वह अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बना था। वह अभी तक अपने प्राकृतिक स्वरूप में था।

(ग) लेखक का विचार है कि प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति किसी के लेखन में कहीं अधिक सहायक होती है। अनुभव लेखक के अंदर की विवशता तथा आकुलता को बाहर निकालने में उतना सक्षम नहीं होता जितनी अनुभूति होती है। लेखन के लिए आंतरिक अनुभूति, संवेदना तथा कल्पना का होना अनिवार्य है, न कि सिर्फ़ अनुभव का। सच्चा लेखन भीतरी विवशता से पैदा होता है। जब तक रचनाकार का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता। इसलिए प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है।

खंड - ङ नैतिक शिक्षा

प्रश्न (13) (क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (4)

1. (i) 21 जून 1

2. (iv) उपरोक्त सभी 1

3. (iv) उपरोक्त सभी 1

4. (i) न्याय को 1

(ख)जिस व्यक्ति को कर्म करने में ही आनंद का आभास होने लगता है तब उसकी समस्त शक्ति (3)

Download from www.MsEducationTv.com

कर्म की कुशलता पर ही केंद्रित हो जाती हैं।ऐसा व्यक्ति सुख- दुख, हानि-लाभ, जय- पराजय में समान भाव रखता है। ऐसे व्यक्ति को ही सच्च कर्मयोगी कहा जाता है।

(ग) राष्ट्रीयता किसी भी देश की आत्मा होती है। इसकी सुदृढ़ता तथा व्यापकता में ही देश की समृद्धि एवं प्रगति निहित है। जो देश आन्तरिक रूप से जितना अधिक सघन और एक है, वह उतना ही सशक्त और प्रभावशाली भी होता है। जिस देश के जन-समुदाय में जितनी अधिक सद्भावना, सहिष्णुता एवं बलिदान की भावना है, वह उतना ही अधिक ऊर्जावान व विकसित होता है। (3)

------------------------XXXXXXXXXX ---------------------------

Download from www.MsEducationTv.com